गांव वाले हैं भगवान

यात्रियों को भोजन करा रहे गणेशपुर के ग्रामीण

अमर उजाला ब्यूरो

नई टिहरी में टीएचडीसी की ओर से राहत शिविर में भोजन करते यात्री।

उत्तरकाशी। गंगोत्री घाटी में पांच दिनों से फंसे यात्रियों के लिए ग्रामीण भगवान से बढ़कर हैं। ग्रामीण न केवल यात्रियों को खाना खिला रहे, बल्कि बुजुर्ग यात्रियों को उत्तरकाशी लाने में भी मदद कर रहे हैं।

जिले में दर्जनों संस्थाएं काम कर रही हैं, लेकिन आपदा की इस घड़ी में चंद संस्थाएं ही पीड़ितों के मदद को खड़ा दिख रही है। गंगोत्री मार्ग पर पड़ने वालों गांवों के ग्रामीण यात्रियों के लिए भगवान बने हुए हैं। ग्रामीण यात्रियों का अतिथियों की तरह सत्कार कर रहे हैं। गणेशपुर महिला मंगल दल व नवयुवक मंगल दल से जुड़ी शिवदेई, अबला देवी, बलवीर मखलोगा, विजय लक्ष्मी नौटियाल, पुष्पा चौहान आदि ने आटा व सब्जियां एकत्रित कर प्रतिदिन 200 से 300 यात्रियों को भोजन करा रहे हैं। गंगोरी व बाड़ाहाट के युवा पैदल रास्ते में न केवल यात्रियों को पानी पिला रहे हैं, बल्कि बुजुर्ग यात्रियों को उत्तरकाशी तक लाने में भी मदद भी

युवा यात्रियों को उत्तरकाशी पहुंचाने में कर रहे हैं मदद

कर रहे हैं। सुक्की गांव में भी सैकड़ों यात्री गांव में शरणार्थी के रूप में शरण लिए हुए हैं। ऐसे में गंगोत्री घाटी से उत्तरकाशी पहुंचने वाले यात्री न गंगा न यमुना बल्कि ग्रामीणों को अपना भगवान समझ कर दुआएं दे रहे हैं। गुजरात की नानू बेन व लुंबनी नेपाल फूलमती कुरमी बताती है कि यदि आसपास गांव नहीं होते तो शायद अब तक जान चली जाती। 18 जून को गगनानी से मनेरी पैदल पहुंचते ही भूखे-प्यासे शरीर टूटने लगा था, लेकिन गांव के ग्रामीणों का शुक्र हैं, जिन्होंने हमें खाना खिलाया। हमारे लिए तो गांव वाले भगवान से बढ़कर है। इसी तरह गंगोत्री से लौटने वाले अधिकत्तर यात्री ग्रामीणों का शुक्रिया अदा कर रहे हैं।

बदरीनाथ में यात्रियों ने किया प्रदर्शन

बदरीनाथ। धाम में तीर्थयात्री तिल-तिल कर मर रहे हैं। शासन-प्रशासन के कोई भी लोग तीर्थयात्रियों को ढांढस देने के लिए नहीं पहुंचे हैं। इससे गुस्साए तीर्थयात्रियों ने प्रदेश और केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। हालांकि बाद में पुलिस ने लोगों को समझा बुझाकर शांत किया। मंदिर समिति की ओर से तीर्थयात्रियों को पूरी, छोले दिए जा रहे हैं। हैलीपैड पर आर्मी द्वारा मेडिकल कैंप लगाया गया है। अस्वस्थ, बुजुर्ग, बच्चे और महिलाओं को हेलीकॉप्टर से जोशीमठ भेजा जा रहा है। एक दिन में 40 से 45 लोगों को ही निकाला जा रहा है। सेना के दो हेलीकॉप्टर रेस्क्यू कर रहे हैं। यहां तीर्थयात्रियों ने सुना कि 25 जून से फिर उत्तराखंड में बारिश हो सकती है, जिसे सुनते ही बच्चे और महिलाएं रोने लग गए। यात्रियों को शीघ्र नहीं निकाला गया, तो तीर्थयात्री आपा खो सकते हैं।

शुक्रवार को गोविंदघाट से रेस्क्यू कर यात्रियों को निकालते सेना के जवान।

स्वयंसेवी संस्थाओं ने लगाए भंडारे

अमर उजाला ब्यूरो

गोपेश्वर/पीपलकोटी। आपदा में फंसे तीर्थयात्रियों के लिए बदरीनाथ हाईवे पर विभिन्न स्वयं सेवी संस्थाओं ने निशुल्क भंडारे का आयोजन किया है। नगर पालिका गोपेश्वर संदीप रावत के नेतृत्व में भंडारा आयोजित किया गया। सोनला में हिंदू जागरण मंच द्वारा तीर्थयात्रियों के लिए बुरांस का जूस उपलब्ध कराया जा रहा है। मंच के जिला संयोजक लक्ष्मण सिंह राणा, अवतार भंडारी, प्रकाश मैंदुली, हरीश भंडारी और बलवीर नेगी द्वारा तीर्थयात्रियों के वाहनों को रोककर उन्हें खाना, केले, बिस्कुट दिए जा रहे हैं। व्यापार संघ पीपलकोटी द्वारा भी मुख्य बाजार में भंडारे का आयोजन किया गया है। संघ के सदस्य सज्जन लाल, सुनील शाह ने बताया कि तीर्थयात्रियों के लिए खाने की व्यवस्था की गई है।

घनसाली में व्यापारियों ने कराया भोजन

घनसाली (टिहरी)। केदारनाथ मार्ग पर फंसे सैकड़ों यात्रियों ने घनसाली पहुंचकर राहत की सांस ली है। यहां व्यापारियों ने यात्रियों को भोजन कराया। बृहस्पतिवार को डेढ हजार से अधिक यात्री सड़क खुलने के बाद घनसाली पहुंचे। मौत और जिंदगी से जूझने के बाद घनसाली पहुंचे यात्रियों में शामिल महिलाएं, बच्चे और बुजुर्गों ने चेहरों से हवाइयां उड़ी हुई थी। यात्री सुनील कुमार, सुरेश, ममता, कमला आदि ने बताया कि यात्रा मार्ग पर छह दिनों से भूखे प्यासे थे। इस दौरान प्रशासन की ओर से कोई मदद न मिलने पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त की। यहां महादेव नौटियाल, अनंत राम, बीकेटीसी के सदस्य चंद्रकिशोर मैठाणी,अमनदीप भट्ट,लक्ष्मी प्रसाद, रजनीकांत सुरीरा, द्वारिका प्रसाद सेमवाल,जितेंद्र, शीशपाल और करमूला ने यात्रियों के भोजन की व्यवस्था की।

अमर उजाला

अपनों को गंवा चुकी महिला गौचर हवाई पट्टी पर कुछ इस तरह रो पड़ी।

हर्षिल में यात्रियों को ढांढस बंधाते सेना की सेंट्रल कमान के कमांडर अनिल चैप।

केदारनाथ धाम में तबाही का मंजर

उत्तरकाशी डुंडा के पास इस हाल में पहुंचे गंगोत्री राजमार्ग से चल रही है वाहनों की आवाजाही।

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्रीनगर ने यात्रियों के लिए लगाया स्वास्थ्य शिविर।

रुद्रप्रयाग पैदल पहुंचे मध्य प्रदेश के यात्रियों की डिटेल लेती पुलिसकर्मी।

कहीं आफत कहीं राहत

बंगाल के दो हजार यात्री फंसे हैं

नई टिहरी। केदारनाथ-बदरीनाथ में फंसे पश्चिम बंगाल के यात्रियों की मदद के लिए पश्चिम बंगाल के दो मंत्री यहां डटे है। वापस लौटने वाले यात्रियों से हालचाल पूछ रहे है। पश्चिम बंगाल के नियोजन मंत्री आरपी सिंह और परिवहन मंत्री मदन मित्रा ने पत्रकारों से बातचीत में बताया कि पश्चिम बंगाल के लगभग 1500 से लेकर 2000 यात्री केदारनाथ क्षेत्र में फंसे हैं। जिसमें से लगभग 200 लोगों को रेस्क्यू से निकालकर अपने गंतव्य की ओर रवाना कर दिया गया है। फंसे यात्रियों और उनके परिजनों से बराबर टेलीफोन पर वार्ता कर जानकारी ली जा रही है। राहत और बचाव कार्य में तेजी लाने की जरूरत है। पश्चिम बंगाल सरकार यात्रियों को हर संभव मदद देगी।

बदरीनाथ, घांघरिया भेजा रसद

गोपेश्वर। बदरीनाथ और घांघरिया में रासद आपूर्ति की जा रही है। शुक्रवार को यहां के लिए गौचर से हेलीकॉप्टर से 120 क्विंटल चावल, 120 क्विंटल आटा, 50 क्विंटल दाल, पांच हजार लीटर केरोसिन, इतना ही डीजल और पांच किलो नमक भेजा गया। जोशीमठ हैलीपैड पर तीन टैंकर एटीएफ भी भेज दिया गया है। जनपद में आपदा की कमान संभाले एडीएम संजय कुमार ने बताया कि हेलीकॉप्टर को फ्यूल भरने के लिए देहरादून या गौचर जाना पड़ रहा था, जिससे रेस्क्यू में दिक्कतें आ रही थी, जिसे देखते हुए जोशीमठ में ही फ्यूल सेंटर बना दिया गया है।

सुरक्षा गार्ड लापता

रुद्रप्रयाग। एलएंडटी कंपनी में सुरक्षा गार्ड के पद पर तैनात बच्छणस्यूं पट्टी के डुंग्ररा गांव निवासी महावीर सिंह पटवाल 16 जून से लापता है। कंपनी के सुपरवाइजर सुरक्षा गार्ड प्रेम सिंह ने इस संबंध में राजस्व चौकी पठालीधार में गुमशुदगी दर्ज करवाई है। वहीं महावीर के परिजनों द्वारा भी इस संबंध में चौकी अगस्त्यमुनि में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है। महावीर की 16 जून को एलएंडटी कंपनी के बेडूबगड़ स्थित वर्कशाप में नाइट ड्यूटी थी। रात्रि को मंदाकिनी नदी के उफान पर आने से बेडूबगड़ में वर्कशाप समेत सुरक्षा गार्ड पोस्ट बह गया। इसके बाद से ही महावीर लापता चल रहा है।

बदरी-केदार में अभी साढ़े तीन हजार यात्री

गोपेश्वर/रुद्रप्रयाग। बदरीनाथ में नौ हजार, घांघरिया में एक हजार, गोविंदघाट में 700 और गुंदियाल में 300 यात्री अभी भी फंसे हुए हैं। उधर केदारनाथ में करीब 1500 तीर्थयात्री अटके हुए हैं। अभी तक बदरीनाथ और घांघरिया से जोशीमठ पहुंचाए गए करीब तीन हजार तीर्थयात्रियों को शुक्रवार को कर्णप्रयाग पहुंचाया गया। जिला प्रशासन की ओर से कुमाऊं से करीब सौ और सेना के वाहनों में तीर्थयात्रियों को उनके गंतव्य को भेजने की व्यवस्था की गई है। यहां से तीर्थयात्रियों को चौखुटिया, रानीखेत होते हुए बस और टैक्सी से कुमाऊं क्षेत्र पहुंचाया गया। चमोली के डीएम एसए मुरुगेशन ने बताया कि शुक्रवार को लगभग 700 लोगों को जोशीमठ पहुंचाया गया है। बदरीनाथ से 150, घांघरिया से 400, पांडुकेश्वर से 90, पुलना से 26 और गोविंदघाट से 14 तीर्थयात्रियों, स्थानीय लोगों को पैदल और हेलीकॉप्टर से रेस्क्यू कर जोशीमठ लाया गया है। जोशीमठ में जिला प्रशासन की ओर से भंडारे का आयोजन भी किया गया है।

शुक्रवार को हेलीकाप्टर से निकाले 194 यात्री

उत्तरकाशी। शुक्रवार को हर्षिल, भटवाड़ी व मनेरी से हेलीकाप्टर से 194 तीर्थयात्रियों को निकाला गया। इन यात्रियों को मातली, चिन्यालीसौड़ व देहरादून में छोड़ा गया। उनके मुताबिक गंगोत्री में महज 200 तथा भटवाड़ी से गंगनानी की ओर एक हजार तीर्थयात्री फंसे हुए हैं। हर्षिल में फंसे यात्री भी पैदल गंगनानी होते हुए नीचे की ओर आ रहे हैं। जबकि जान जोखिम में डालकर पैदल उत्तरकाशी तक पहुंचे तथा हैलीकॉप्टर से चिन्यालीसौड़ में उतरे यात्रियों की मानें तो अब भी भटवाड़ी, हर्षिल व गंगोत्री क्षेत्र में चार हजार से अधिक तीर्थयात्री फंसे हुए हैं।

वीर सिंह का नहीं लग रहा पता

नई टिहरी। केदारनाथ के रामबाड़ा में व्यापार करने वाले जाखणीधार प्रखंड के म्यूंडा निवासी वीर सिंह गुनसोला का पता नहीं चल पा रहा है। परिजन उनकी तलाश में घर से रामाबाड़ा की ओर रवाना हो गए।

गौचर हवाई पट्टी पर गौरीकुंड में फंसे यात्रियों को लाते सेना के जवान।

जोशीमठ राहत कैंप से सेना के वाहन में ऋषिकेश के लिए रवाना होते तीर्थयात्री।

गौरीकुंड से लाए गए यात्रियों का स्वास्थ्य परीक्षण करते सेना के चिकित्सक।

यात्रियों से अटा उत्तरकाशी, नहीं मिले वाहन

गंगोत्री घाटी से यात्रियों का लौटना जारी, जिला मुख्यालय पहुंचे दो हजार यात्री

अमर उजाला ब्यूरो

उत्तरकाशी। गंगोत्री की ओर से भूखे-प्यासे लौट रहे तीर्थयात्रियों को अब उत्तरकाशी से भी गंतव्य तक जाने के लिए वाहन नहीं मिल पा रहे हैं। ऐसे में पूरा नगर यात्रियों से अट गया है।

पांच दिनों तक गंगोत्री मार्ग में फंसे यात्रियों का उत्तरकाशी पहुंचने का सिलसिला जारी है। शुक्रवार को विभिन्न पड़ावों से दो हजार से अधिक यात्री यहां पहुंचे। इनमें कुछ यात्रियों को तो ऋषिकेश के लिए सरकारी व गैर सरकारी वाहन मिल गए, लेकिन ज्यादातर वाहन के इंतजार में बैठे हैं। पांच दिन भूखे-प्यासे काटने वाले यह यात्री अपनी पीड़ा फफक-फफक कर बंया कर रहे हैं। मुंबई धारकोपर के मनोज कहते हैं कि उनके दल में 22 लोग शामिल हैं। पांच दिनों से गंगनानी में फंसे थे। मौसम खुलने के बाद से तीन दिनों से लगातार पैदल चलकर यहां पहुंचे हैं। दल में शामिल कई बुजुर्ग यात्री पैदल चलकर अवस्थ हो गए हैं। बताया कि उत्तरकाशी से गंगनानी के बीच अब भी एक हजार से अधिक लोग फंसे हैं। कोटा राजस्थान की बुजुर्ग यात्री शुकुंतला देवी बताती है कि उनका 50 यात्रियों का दल नेताला में फंसा था। अब यहां से ऋषिकेश तक जाने के लिए वाहन नहीं मिल रहे हैं।

> गंगोत्री-यमुनोत्री मार्ग पर फंसे यात्रियों को निकालने के प्रयास किए जा रहे हैं। वाहनों की कमी को देखते हुए देहरादून से रोडवेज की 35 बसे मंगाई गई हैं। स्थानीय स्तर पर यात्रियों को छोड़ने के लिए बसें न देने वाले स्कूलों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की जाएगी। *- प्रीतम सिंह पंवार, शहरी विकास मंत्री*

यात्रियों के पहुंचने का सिलसिला जारी

नई टिहरी। केदारनाथ क्षेत्र में फंसे करीब 800 यात्रियों को शुक्रवार को टिहरी-घनसाली-गुप्तकाशी मार्ग से ऋषिकेश और हरिद्वार पहुंचाया गया। इसके लिए जिला प्रशासन ने 90 वाहनों का अधिग्रहण किया है। केदारनाथ क्षेत्र से आ रहे नेपाली और बिहारी मजदूरों की पुलिस सघनता से तलाशी ले रही है। आपदा प्रभावितों की मदद के लिए खांडखाला और कोटी कालोनी में राहत शिविर लगाए गए हैं। टीएचडीसी, हिंदुस्तान कंपनी, होटल एसोसिएशन और शांतिकुंज गायत्री पीठ की ओर से खांडखाला और कोटी कालोनी में यात्रियों के लिए राहत शिविर लगाया गया है। जिनमें यात्रियों को रहने- खाने की व्यवस्था की गई है। स्वास्थ्य विभाग की ओर से यात्रियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है। 30 वाहनों से यात्रियों को नि:शुल्क दिल्ली पहुंचाया गया।

वह नहीं, उसकी मौत की आई खबर

कुछ दिन बाद बलवीर को आना था घर, अब है कोहराम

डा. मुकेश नैथानी

घनसाली (टिहरी)। घर का एकमात्र कमाऊ व्यक्ति अब नहीं रहा। यात्रा सीजन में हर वर्ष रामबाड़ा में होटल में नौकरी करने वाला भिलंगना के गवाणा बलवीर सिंह भी आपदा की भेंट चढ़ गए। कुछ दिन पहले उसने बताया था कि इस बार सीजन खूब चल रहा है। वह थोड़ा भीड़ कम होने पर एक-दो दिन के लिए घर आएगा। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। आपदा से उसकी मौत की खबर आई है।

गवाणा निवासी भगवानी देवी के लिए भी यह आपदा उसके माथे का सिंदूर मिटाने वाली साबित हुई।

ग्रामीण शव लेने के लिए रामबाड़ा रवाना

अनहोनी की आशंका उसे पहले से ही हो रही थी। कारण बलवीर से संपर्क नहीं हो पा रहा था। जब उसकी मौत की सूचना मिली तो घर में कोहराम मच गया। रिश्तेदार और ग्रामीण भगवानी देवी को सांत्वना देने के लिए उसके घर पहुंच रहे हैं। गांव में सन्नाटा है। केवल भगवानी देवी की चीखें ही उसे तोड़ रही है। हर किसी के मुंह से केवल यही शब्द निकल रहे हैं ये भगवान तूने ये क्या किया। सबके अपने तर्क हैं। कोई धार्मिक स्थलों की पवित्रता नरूट करने को इसका कारण मान रहे हैं। कोई प्रकृति से छेड़छाड़ का जिम्मेदार बता रहा है। जितने मुंह, उतनी बातें। हर बात लौटकर बलवीर सिंह पर लौट रही है। भगवानी के सामने जिम्मेदारियों का पहाड़ है। उसके बच्चे अर्जुन (12), जुडवां कोम और नीतू (8) और कुसुम (6) की समझ में ज्यादा कुछ नहीं आ रहा है। वे अपनी मां को रोते हुए देख रहे हैं, तो वे भी रो रहे हैं। बच्चे अपनी मां से लिपटे हैं। उनके रिश्तेदार राम सिंह चौहान ने बताया कि शव लेने के लिए गांव के लोग पैदल ही रामबाड़ा के लिए निकले हैं।

श्रीनगर में बसों की कमी के चलते ट्रकों में सफर करने को मजबूर हैं तीर्थयात्री।